M.A/M.Sc. Previous (Geography)

Village Survey Report

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

(अनुक्रमणिका)

क्र. संख्या	विषय - वस्तु	पृष्ठ संख्या
01	प्रस्तावना	
02	सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन	
03	अध्ययन क्षेत्र	
04	अध्ययन का उद्देश्य	
05	शोध परिकल्पना	
06	शोध विधितंत्र	
07	आकड़ो का संकलन	
08	भौगोलिक परिवेश	
	विश्व परिचय -	
	भारत - परिचय	
	राजस्थान - परिचय	
	जयपुर - कालवाड़ - मालीवाड़ा परिचय	
(09)	शोध में प्रयुक्त उपकरण - प्रश्नावली	
(10)	शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी	
(11)	शोध की परिसीमन	
(12)	निष्कर्ष -	

Scanned by CamScanner

1. प्रस्तावना

Date
Page 01

(1) प्रस्तावना :-

मानव स्वयं की सभ्यता की सुरक्षा का उचित प्रबन्ध अपने समुदाय की विशिष्टताओं, वर्ग विशेषताओं, क्षेत्र विभिन्नताओं स्वरूप परिवर्तनों और उसकी गतिशीलता के ऊपर निश्चित करता है। इस प्रकार के शरण स्थल में जीवन निर्वाह का प्रबन्ध कैसे किया जाये कितने परिक्षेत्र में उसे परिकल्पित किया जाये। इन सभी आशयों को इस विवेकशील जैविक प्राणी ने भौतिक भूदृष्य की गोद में स्थित सम्पन्नता के आधार पर सुनिश्चित किया है।

- यही कारण है कि इस मानव सभ्यता ने स्थलीय से लेकर अधिमानित नगरीय संरचना का नया रूप प्रस्तुत किया है। मानव की सभ्यता में एक परम स्वरूप भी मिलता है। इसलिये अधिवासीय और मानव समुदाय की कतिपय विशेषताओं को ध्यान में रखकर जनसंख्या आकारिकी प्रादेशिकी तथा उसकी विभिन्न संरचनाओं के स्थितिय तत्वों को अध्ययन के उद्देश्य के अन्तर्गत निरूपित किया गया है।
- इसलिए किसी क्षेत्र का सर्वेक्षण उस क्षेत्र की संरचना को समझने की कुंजी है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

अध्ययन क्षेत्र :-

प्रत्येक भौगोलिक क्षेत्र का अध्ययन सुनियोजित रूप से करने के लिए एक निश्चित क्षेत्र मे उसका अध्ययन करना अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। शोधकर्ता ने सर्वेक्षण के लिए जयपुर जिले के अन्तर्गत कालवाड़ - उप - तहसील के ग्राम - मालीवाड़ा को अध्ययन की इकाई माना है।

अध्ययन का उद्देश्य :-

किसी भी क्षेत्र के भौगोलिक अध्ययन का उद्देश्य एक भूगोल के विद्यार्थी के लिए वहा पर पाई जाने वाली भौगोलिक, प्राकृतिक स्थलाकृतियों, जलवायु एवं उच्चावच, मृदा, कृषि, संसाधनों, परिवहन, आर्थिक स्तर, आदि का अध्ययन करना तथा संज्ञान लेना और स्थानिक समस्याओं का अवलोकन करना तथा साथ ही मनुष्य एवं वातावरण के मध्य पारस्परिक सहसबधो के बारे मे अवगत कराना व पुराने तथ्यों का सत्यापन नवीन तथ्यों की खोज एवं परीक्षण भौगोलिक यथार्थ एवं तथ्यों के मध्य पाए जाने वाले प्रकार्यात्मक सम्ब-धों की खोज अवधारणाओं के निर्माण आदि मे प्रयोग किया जा सकता है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

परिकल्पना :-

अध्ययन क्षेत्र जिला व अतरसील के निकट स्थित होने के कारण ग्राम के विकास को एक नई दिशा में गति मिली हैं। उद्योगो के साथ नगरीकरण, परिवहन कृषि की स्थिति, रोजगार, आदि आर्थिक ग्रामीण क्षेत्रीय स्थिति को बढ़ावा मिला हैं। तथा कृषि भूमि का घटता आकार व घटता भू-जल स्तर समस्यात्मक है।

- ग्रामीण विकास की विभिन्न योजनाओं को ग्रामीण जीवन स्तर एवं अर्थव्यवस्था पर लागू करना। ग्राम के प्राकृतिक सौन्दर्यकरण एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को पुनः विकसित करना समस्यात्मक हैं।

विधितंत्र :-

सर्वेक्षण अध्ययन को सुनियोजित रूप से करने के लिए एक निश्चित कार्य प्रणाली का पालन आवश्यक हैं। भौगोलिक अध्ययन की प्रणाली को अपनाते हुए। शोधकर्ता ने इस अध्ययन को विभिन्न चरणों में पूर्ण किया हैं।

(1) सर्वप्रथम अध्ययन क्षेत्र से संबंधित उपलब्ध पुस्तकों एवं पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन किया गया हैं।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

(2) द्वितीय चरण में आकड़ों का एकत्रीकरण, आंकड़ो को तालिका रूप में परिवर्तित करना तथा इन एकत्रित आंकड़ो एवं उपलब्ध विषय सामग्री को विभिन्न मानचित्रीकरण विधियों का उपयोग कर मानचित्र बनाये व गणितीय सूत्रों का उपयोग कर विभिन्न परिवर्तनों को ज्ञात किया गया।

– **आंकड़ो का संकलन:-**

सर्वेक्षण कार्य में मुख्यत: प्राथमिक आंकड़ो का प्रयोग किया गया है। लेकिन जहाँ आवश्यकता महसूस हुई वहाँ पर द्वितीय आंकड़ो का प्रयोग किया गया है। इस सर्वेक्षण कार्य के लिए आँकड़े निम्नांकित संस्थाओं से एकत्रित किये गये है।

1. कार्यालय उप, निदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी, कलक्ट्रेट, जयपुर
2. नगर निगम जयपुर
3. जिला सांख्यिकी रूपरेखा, जयपुर
4. उप - तहसील कालवाड़

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

2. भौगोलिक परिवेश

- पृथ्वी पर मानव को रहते हुए लाखों वर्ष बीत चुके है। इस लम्बे समय में मानव ने प्राकृतिक वातावरण के साथ समायोजन करना सीखा है। मानव ने तकनीकी विकास के साथ - साथ वातावरण समायोजन में तीव्र गति से परिवर्तन किया है।

- विश्व में अपनी विलक्षण पहचान कायम करने वाला भारत किसी परिचय का मोहताज नहीं है। भारत अर्द्धसंघीय राज्यों का एक संघ है।
- भारत अर्थात इण्डिया (India) दक्षिण एशियाई परिमण्डल का एक वृहत भूखण्ड है। भूमण्डल पर भारत की अवस्थिति उत्तरी एवं पूर्वी गोलार्द्धों में 6°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी अक्षांशो तथा 68°7' पूर्वी से 97°25' पूर्वी देशान्तरों के मध्य स्थित है।
- भारत का देशान्तरीय विस्तार (30 अंश) है। लगभग 30 अंश के देशान्तरीय विस्तार के कारण देश को दो समय मेखलाओं में बांटा जा सकता था, लेकिन प्रशासनिक व अन्य समस्याओं से बचने के लिए 82°30' पूर्वी देशान्तर रेखा को देश की मानक समय (I.S.T) के निर्धारण हेतु मानकर याम्योत्तर के रूप में मानकर कर लिया गया है। जिसके अनुसार भारतीय मानक समय ग्रीनविच औसत समय (G.M.T) से 5 घन्टा 30 मिनट आगे रहता है।

भारत की आकृति पूर्णतः त्रिभुजाकार न होकर चतुष्कोणीय है। इसकी स्थलीय सीमा की लम्बाई 15,200 कि.मी. व समुन्द्रतट की कुल लम्बाई 7517 कि.मी.(–) है। (सभी द्वीप समूह शामिल)

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

- पूर्व से पश्चिम इसकी लम्बाई 2933 कि.मी तथा उत्तर से दक्षिण 3214 km है। भारत का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है जो स्थलमण्डल के क्षेत्रफल का 2.4% है।

भारत के उत्तर-पश्चिम में पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान, उत्तर-पूर्व - चीन, नेपाल और भूटान तथा पूर्व मे म्यांमार एवं बांग्लादेश तथा दक्षिण में पाक जलसंधि द्वारा श्रीलंका से पृथक किया जाता है।

- भारत एक शान्तिपूर्ण देश है। इतिहास में इस तथ्य के कोई प्रमाण उपलब्ध नही हैं कि भारतीय सेना ने कभी किसी विदेशी क्षेत्र पर आक्रमण एवं जबरन कब्जा किया हो। भारत का इतिहास ऐसे लोगों का इतिहास है जो अपने पड़ोसियों के साथ शान्ति और मित्रतापूर्वक रहना चाहते हैं। परन्तु हम अपनी स्वतंत्रता को भली भाँति सुरक्षित रखना भी जानते हैं।

भारतीय संघ के अन्तर्गत (2011) कुल 29 राज्य और 7 केन्द्रशासित प्रदेश समाहित हैं। कर्क रेखा भारत के मध्य भाग से 8 राज्यों (गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा एवं मिजोरम) से होकर गुजरती है।

भारत की कुल जनसंख्या (2011) 1,210,193,422 (121.02 करोड) थी।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

2. राजस्थान एक सामान्य परिचय :-

राजस्थान राज्य भारतीय उपमहाद्वीप के ~~दक्षिण पश्चिम~~ उत्तर-पश्चिम भाग में स्थित है। यहां के गौरवमय इतिहास, वीरता एवं शौर्य की गाथाओं का प्रतिबिम्ब उभरता है। मरूस्थल में विस्तृत बालुका स्तूपों एवं रेत के सागर का दृश्य, अरावली की विस्तृत श्रृंखलाओं का मृदृश्य, विपरीत प्राकृतिक परिस्थितियों में भी यहां जीवन पुष्पित एवं पल्लवित होता रहा है। जो मानव का प्रकृति से सामंजस्य का प्रतीक है। वर्तमान में राजस्थान अपनी सांस्कृतिक धरोहर को संजोये हुए विकास के पथ पर अग्रसर है।

इसकी भौगोलिक स्थिति 23°3' से 30°12' उत्तरी अक्षांशो तथा 69°30' से 78°17' पूर्वी देशान्तरों के मध्य स्थित है। इसके उत्तर दिशा में पंजाब, उत्तर-पूर्व में हरियाणा एवं दक्षिण में गुजरात तथा पश्चिम में पाकिस्तान, पूर्व में उत्तरप्रदेश और दक्षिण-पूर्व में मध्य प्रदेश स्थित है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह भारत का सबसे बड़ा राज्य है। इसका क्षेत्रफल - 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है। जो भारत के लगभग 10.41 प्रतिशत क्षेत्रफल के बराबर है। राजस्थान की स्थलीय सीमा लगभग 5920 किलोमीटर है। राज्य की लम्बाई उत्तर से दक्षिण तक 826 किलोमीटर तथा पूर्व से पश्चिम तक 869 किलोमीटर है।

राज्य का आकार विषमकोण चतुर्भुज के समान है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

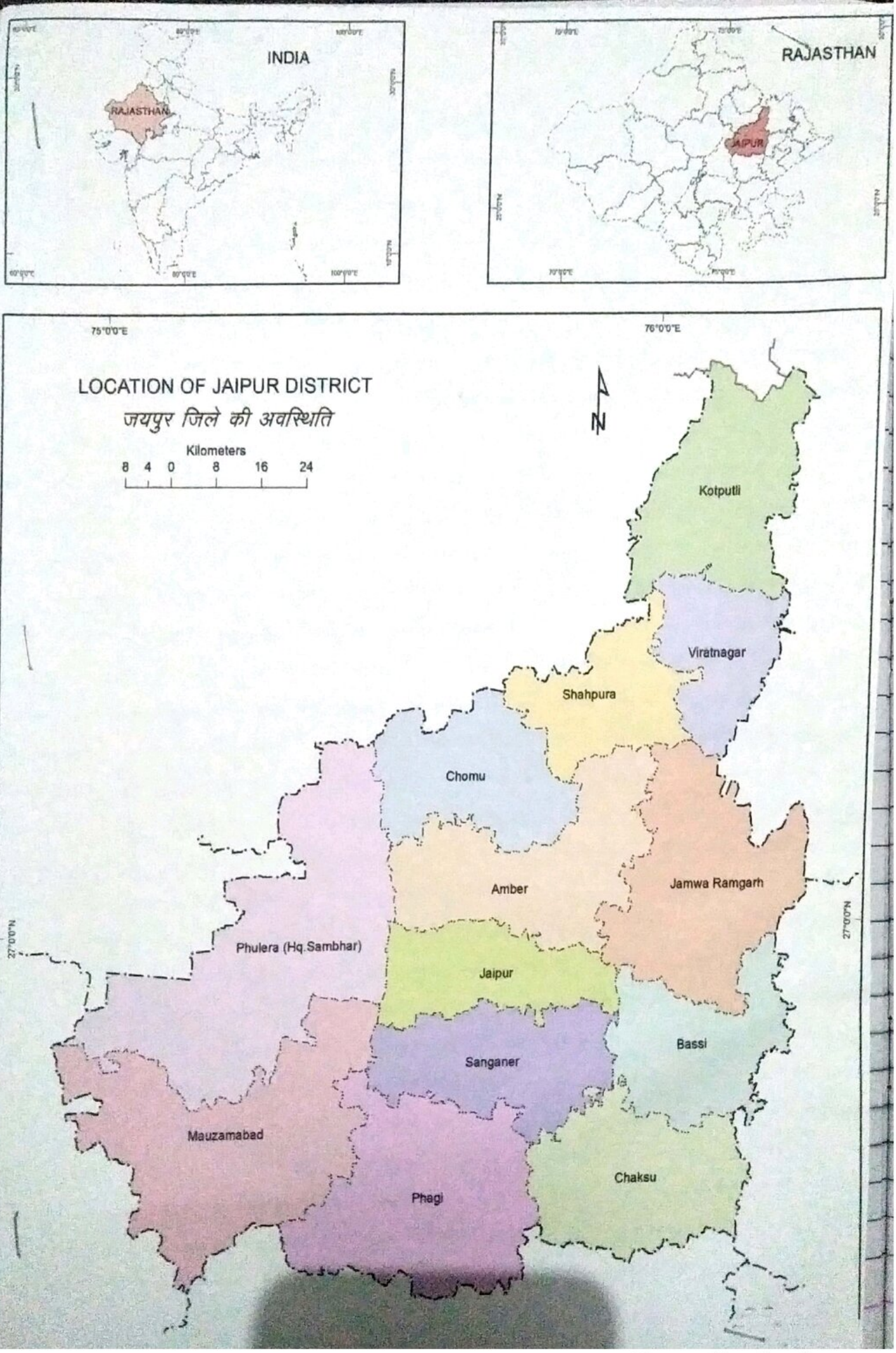

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

- राज्य की पश्चिमी सीमा भारत - पाकिस्तान की अन्तरराष्ट्रीय सीमा है जो 1070 कि॰मी लम्बी है। कर्क रेखा राज्य के दक्षिणी भाग से बाँसवाड़ा नगर के दक्षिण (कुशलगढ़ तट) से गुजरती है।

राजस्थान की कुल जनसंख्या (2011) के अनुसार 6,85,48,437 है। जो देश की कुल जनसंख्या का 5.67% है। राजस्थान मे 200 व्यक्ति प्रति वर्ग कि॰मी॰ क्षेत्र में निवास करते है। जनसंख्या की दृष्टि से (2011) में राजस्थान का भारत मे आठवाँ स्थान है। राज्य का लिंगानुपात प्रति हजार पुरूष पर 928 महिलाएँ है। (सर्वाधिक लिंगानुपात - डूंगरपुर (994) सबसे कम धौलपुर (846) है। राज्य में साक्षरता 66.10 प्रतिशत है। (पुरूष - 79.20, स्त्रीयाँ - 52.1)

राज्य की जलवायु शुष्क से उप-आर्द्र अथवा उप-उष्ण (अर्द्ध-शुष्क) है। यहा की जलवायु में प्रादेशिक विविधता पाई जाती है। राज्य में वनाच्छादित क्षेत्र (2017) 32,737 वर्ग कि॰मी॰ है। जो कुल क्षेत्रफल का 9.57 प्रतिशत है। राज्य एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाला राज्य है। राज्य की लगभग 62% से अधिक जनसंख्या प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से कृषि एवं पशुपालन से ही अपनी जीविकोपार्जन करती है। राजस्थान खनिजों की दृष्टि से एक सम्पन्न राज्य है। राजस्थान में विविध खनिजों की प्राप्ति के कारण 'खनिजो का अजायबघर' कहा जाता है। इनमें वोलेस्टोनाइट, जास्पर, जस्ता, सीसा, फ्लोराइट, जिप्सम, संगमरमर, एस्बेस्टॉस, घीया पत्थर, रॉक फॉस्फेट आदि खनिजो के उत्पादन में राज्य का एकाधिकार है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

देश के कुल खनिज उत्पादन में राजस्थान का लगभग 22 प्रतिशत योगदान है। खनिज भण्डार की दृष्टि से द्वितीय स्थान तथा उत्पादन की दृष्टि से तृतीय स्थान है। राजस्थान में प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता, ऊर्जा संसाधन, मानव संसाधन, तकनीकी विकास का स्तर तथा आधुनिक परिवहन व संचार के साधन औद्योगिकीकरण के आधारभूत तत्व है। विस्तृत क्षेत्रफल तथा प्राकृतिक संसाधनों में धनी होने के बावजूद भी राजस्थान में उद्योगों का पर्याप्त विकास नहीं हो पाया है। इसके लिए राज्य सरकार द्वारा 1978, 1990, 1994, 1998 में औद्योगिक नीतियाँ बनाई गयी। तथा औद्योगिक विकास हेतु 2015 में विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) विधेयक पारित किया गया तथा राज्य सरकार ने 'मेक इन राजस्थान' का नारा दिया, उद्योग के विकास हेतु केन्द्रीय व राज्य सरकार ने कई योजनाएँ आरम्भ की है।

राजस्थान में सतही जल की उपलब्धता सम्पूर्ण भारत का मात्र 1.16 प्रतिशत एवं दोहन योग्य भू-जल मात्र 1.72 प्रतिशत है। सतही जल संसाधन - नदियाँ, झीलें, व तालाब प्रमुख है।

- प्रमुख नदियाँ - चम्बल, बनास, लूनी, माही, बाणगंगा, बेड़च, गम्भीरी, सूकड़ी, कालीसिंध आदि प्रमुख नदियां है। राज्य में मुख्य झीलें जयसमन्द, पिछोला, व फतहसागर (उदयपुर), राजसमन्द (राजसमन्द), आनासागर, पुष्कर (अजमेर) सिलीसेढ़ (अलवर), कोलायत (बीकानेर), नवलखा झील (बूंदी) कायलाना, बालसमन्द (जोधपुर) गेयसागर (डूँगरपुर) नक्की झील (माउण्ट आबू) आदि है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

राजस्थान मे लगभग 1500 बड़े तालाब है। राज्य में सिंचाई के प्रमुख साधन नलकूप - कुएँ, नहरे, तालाब है। राज्य के कुल सीचित क्षेत्र के 66 प्रतिशत भाग में कुओं व नलकूपों से ही सिंचाई होती है। राज्य में 33 प्रतिशत भाग में सिंचाई नहरों के द्वारा होती है। तथा 0.7 प्रतिशत भाग पर सिंचाई तालाब द्वारा और 0.3 प्रतिशत भाग पर अन्य साधनों से सिंचाई होती है।

राज्य पशुधन की दृष्टि से सम्पन्न है। भारत के कुल पशुधन का लगभग 11.27 प्रतिशत तथा कुल पशु शक्ति का 35 प्रतिशत भाग राजस्थान में पाया जाता है। पशुपालन यहाँ की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पशुजनगणना (2012) के अनुसार राज्य में कुल पशुओं की संख्या 577.28 लाख है। सर्वाधिक पशुधन बाड़मेर एवं उदयपुर में है जबकि सबसे कम धौलपुर में है। राज्य में पशु घनत्व (2012) 169 प्रतिवर्ग किलोमीटर है। सर्वाधिक पशु घनत्व डूंगरपुर में तथा न्यूनतम जैसलमेर में रिकॉर्ड किया गया है।

राजस्थान वन्य जीवों की दृष्टि से देश में असम के बाद दूसरे स्थान पर है।

परिवहन के रूप में राज्य में सड़क, रेलमार्ग व वायु मार्ग तीनों ही है। राज्य में रेल लाइनों की लम्बाई (2016) में 5893 कि.मी. और सड़कों की लम्बाई (2017) में 226853.86 कि.मी. है। राज्य सड़कों की लम्बाई प्रति 100 वर्ग कि.मी. में 66.24 कि.मी. है। तथा रेलमार्गों की औसतन लम्बाई 17.01 किमी प्रति हजार वर्ग कि.मी क्षेत्रफल में है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

- राज्य में चार एयरपोर्ट क्रमशः सांगानेर (जयपुर), सातानाड़ा (जोधपुर), डबोक (उदयपुर), एवं कोटा भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, चार एयरपोर्ट क्रमशः बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर एवं सूरतगढ़ भारतीय वायुसेना, दो हवाई पट्टियाँ कांकरोली व पिलानी क्रमशः जेके ग्रुप व बिड़ला ग्रुप तथा शेष 16 हवाई पट्टियाँ राज्य सरकार के अधीन हैं।

- राजस्थान में लगभग हिन्दुओं की ही लगभग 150 जातियां और उप-जातियां हैं। इनमें ब्राह्मण, वैश्य, कायस्थ, मीणा, बलाई, माली, भील, जाट, अहीर, नाई, धोबी, दर्जी, डामोर, जादव, कलाल, राजपूतों की अनेक उप-जातियां हैं। मुसलमानों में शेख, पठान, मेव, मुगल, सैयद आदि हैं। तथा खानजादा, कायमखानी, तथा मेव आदि की गणना की जाती हैं। आदिम जातियों में मुख्य रूप से मीणा, भील, गरासिया, सहरिया, तथा डामोर हैं। अपेक्षित जातियों में अहेरी, भील, बढ़ी, बागरी, बाजगर, बांसफोड़, बनजारा, बलाई, चामटा, चांडाल, बावरी, शेरी, सांसी, सेरिया, नट, मांछा, मोची, सुथार, धांची, लुहार, कन्दर, ढेड, डोम, कालबेलिया, माली, नाई, जोगी, कुम्हार, तेली, भांभी, मेहतर, जागरी, गिरासिया, पिंजारा, रावत, मेघवाल, रेगर आदि मुख्य हैं।

राजस्थान प्रशासनिक दृष्टि से 7 संभागों 33 जिलों, 90 उप-जिलों, 314 तहसीलों, 295 पंचायत समितियों 222 नगर पालिकाओं एवं 9900 ग्राम पंचायतों में विभाजित है। राज्य में कुल 43264 आबाद ग्राम व 77869 ढाणियाँ हैं।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

जयपुर जिले का भौगोलिक परिवेश

परिचय :-

जयपुर को राजस्थान की राजधानी, गुलाबीनगरी, भारत का पेरिस तथा प्राचीन कालीन रजवाड़ो की शरणस्थली, स्थापत्य कला, शहर नियोजन, तथा सौन्दर्यता के लिये पहचाना जाने वाला जयपुर शहर वर्तमान में भारत के महानगरीय क्षेत्रों में से एक है। इसकी उत्पत्ति लगभग 283 वर्ष पूर्व हुई थी। जयपुर शहर का नाम सवाई जयसिंह राजा के नाम पर रखा गया। सवाई जयसिंह कछवाहा राजपूत थे। इन्होंने जयपुर नगर की स्थापना 18 नवम्बर, 1727 ई. में की गई। जो मध्यकालीन युग का प्रमुख सुनियोजित शहर कहलाता है, इस प्राचीन कालीन शहर को सुनियोजित स्वरूप देने के लिये विद्याधर भट्टाचार्य द्वारा बनाये गये नक्शो का प्रयोग कर मुख्य शहर की स्थापना की गई थी। जयपुर का प्राचीन नाम ढूँढाड़ था व इसकी राजधानी आमेर थी।

स्थिति एवं विस्तार :-

राजस्थान के पूर्वी भाग में स्थित जयपुर जिला 26°23' से 27°57' उत्तरी अक्षांश एवं 74°55' से 76°50' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। अर्द्धशुष्क जलवायु की विशेषताओं से युक्त यह जिला अरावली पर्वत श्रृंखला की स्थिति को भी दर्शाता है। राजनीतिक इकाई होने के कारण यह जिला भारत के प्रमुख नगरों से स्थलीय एवं वायु परिवहन के माध्यम से जुड़ा हुआ है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

जिले की उत्तर दिशा में सीकर एवं हरियाणा का महेन्द्रगढ़ जिला, दक्षिण में टोंक, पूर्व में अलवर एवं दौसा तथा पश्चिम में नागौर एवं अजमेर जिलो द्वारा सीमांकित है।

धरातलीय स्वरूप :-

स्थलाकृतिक दृष्टिकोण से जयपुर जिला आर्कियन युग के अरावली श्रृंखला के पहाड़ी क्षेत्र पर बसा हुआ है। जयपुर में नाहरगढ़, झालाना की पहाड़ियों के रूप में दिल्ली समूह का भाग भी पाया जाता है। इसके पूर्वी एवं उत्तरी भागों में अरावली की पर्वत श्रृंखला स्थित है। तथा साथ ही विन्ध्यन पर्वत श्रेणी का पर्वतीय भाग विस्तृत है। जिसमें खुदाई व खनन कार्य हो रहा है। और पश्चिम क्षेत्र ग्रेनाइट तथा माइका की चट्टानों की प्रधानता को प्रदर्शित करता है।

जयपुर जिले की भूमि का ढाल उत्तर-दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व की ओर है। यहाँ उच्चावचों के रूप में खो, नाहरगढ़, जयगढ़, आमेर, बांसखोह आदि पहाड़ियाँ प्रमुख हैं। भारत के इम्पीरियल गजेटियर (1908) के अनुसार नगर की अवस्थिति एक सूखी झील पर हुई है। राजामल का तालाब जो कि वर्तमान में 'जलमहल झील' के नाम से जाना जाता है। यह सूखी झील का अवशिष्ट भाग है। जिले की पश्चिमी सीमा सांभर झील बेसिन व विस्तीर्ण बालूका-स्तूप मैदान बनाते हैं।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

जिले में पर्वत, पठार, मैदान :-

जयपुर जिले का पर्वतीय क्षेत्र उत्तरी अरावली पर्वतीय श्रृंखलाओं के सम्बद्ध है। जयपुर के प्रमुख पर्वतीय भाग खो (920 मी), जयगढ़ (648 मी) नाहरगढ़ (699 मी.) व बरवाड़ा (784) मी आदि स्थित है। जिले में सामोद का पठार मुख्य है। जिले मे मैदानो का निर्माण बनास व यमुना की सहायक नदी बाणगंगा व अन्त:प्रवाह अपवाह तन्त्र की नदियो से हुआ है। ये उच्चावच नदियों, जलाशयो के निर्माण, मानव बसाव, कृषि, चारागाह, यातायात एवं परिवहन विकास में सहायक हुये हैं।

मृदा संरचना :-

जिले का 90 प्रतिशत क्षेत्र नवीन जलोढ़ मृदा व रेत से घिरा हुआ है जिले में पीली-भूरी, काली-भूरी मिट्टी पायी जाती है। जिले मे मृदा अपरदन वायु, जल पशुओं, खनन, द्वारा होता है जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति कम हो रही है।

अपवाह तंत्र :-

जिले की प्रमुख नदियों में बाणगंगा (अर्जुन की गंगा), साबी, मेन्था, ढूंढ, मोरेल, बांडी है, वर्तमान में वर्षा की कमी व जनसंख्या के दबाव से नदियों के अपवाह क्षेत्र घटते जा रहे हैं।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

जलवायु :-

जयपुर BAW जलवायु प्रदेश उपार्द्र जलवायु क्षेत्र के अन्तर्गत शामिल है। यहा जलवायु लक्षणों में तापमान, वर्षा प्रमुख है। यहा तापमान अधिकतम (2014) 47 से.ग्रे. व न्यूनतम 2.8 तथा औसत 26-27 से.ग्रे. रहता है। औसत आर्द्रता प्रतिशत 49 प्रतिशत है। यहा सामान्य वर्षा 54-55 cm है। किन्तु वार्षिक वर्षा प्राप्ति का प्रारूप भिन्नता प्रदर्शित करता है। वर्ष 2011 मे 59. cm वर्षा प्राप्ति थी लेकिन 2014 मे घटकर 58.03 cm रह गई। कुल वर्षा प्राप्ति का 90 प्रतिशत भाग ग्रीष्म कालीन मानसून के द्वारा होती है। शेष 10 प्रतिशत वर्षा शीतकालीन मानसून (मावट) के माध्यम से होती है।

वनस्पति :-

क्षेत्र के बहुमूल्य प्राकृतिक संसाधनो में वनों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। जिले का कुल क्षेत्रफल 11143.00 वर्ग किलोमीटर है। इसमें से (2014) = 757.92 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में वनावरण पाया जाता है। जो कुल क्षेत्रफल का 6.80 प्रतिशत है। जिले में आरक्षित वन 503.15 वर्ग कि.मी. में व संरक्षित वन 254.77 वर्ग कि.मी. में तथा अवर्गीकृत वन 00 है। वनों मे रोहिड़ा, शीशम, बबूल, बेर, नीम, खेजड़ी करोंदा, धौक, कुमटा, बांस, आम, अमरूद, पपीता, आवला, अनार, बेल, आदि पाये जाते है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

खनिज सम्पदा :- खनिज सम्पदा की दृष्टि से धनी क्षेत्र है। यहा मृत्तिका, ताबा अयस्क, डोलोमाइट चूना पत्थर, सेलखड़ी (सोपस्टोन), काँच बालूका, लोहा, फैल्सपार, संगमरमर (मार्बल), चेजा-पत्थर कंकर - बजरी, बेरिलियम, रॉक फास्फेट आदि पाये जाते है।

झीले व बाँध :- जिले में सांभर झील लवणीय झील है। जलमहल झील, तथा बांध - गलता, रामगढ़, छापरवाड़ा, कालख, कानोता, जैतपुरा, आदि बाँध स्थित है।

उद्योग - धन्धे :- जिले मे कच्ची सामग्री की उपलब्धता के अनुसार अनेक उद्योगों का विकास हुआ है। जिनमे कुटीर, लघु, एवं वृहद तीनों प्रकार के उद्योगों की अवस्थिति पायी जाती है। सन् 2014 मे जिले मे कुल 2796 पंजीकृत कारखाने है।

जिले मे विश्वकर्मा, सीतापुरा मालवीनगर सांगानेर, कूकस, बगरू, बिन्दायका, हिर्णवाला बस्सी, जैतपुरा, मानसरोवर, मानपुरा -माचेड़ी आदि प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र है।

परिवहन :- जिले में (2014) में कुल 6104 Km सड़के थी। जिला राष्ट्रीय परिवहन (N.H- 11, 8, 12, आदि मुख्य मार्गों से जुड़ा है। यहा के राजमार्ग ज्यामितिक सूत्रों और गणितीय सिद्धांतो को ध्यान मे रखकर बनाये गये है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

जयपुर - रिंग रोड़ परियोजना जयपुर शहर से होकर गुजरने वाले भारी यातायात के दबाव को कम करने के लिए अजमेर रोड़ (N.H-8) फागीरोड़ (S.H-12) टोंक रोड़ (N.H-12) एवं आगरा रोड़ (N.H-11) को जोड़ने हेतु रिंग रोड़ का निर्माण किया जा रहा है।

रेल परिवहन -

उत्तर - पश्चिमी रेल्वे जोन का मुख्यालय जयपुर में है। जिले में (2015) 37 रेल्वे स्टेशन है।
जयपुर मेट्रो रेल परियोजना से आर्थिक और सामाजिक विकास को गति मिलेगी इसके लिए

1 जयपुर मेट्रो प्रथम चरण (फेज-1A) - मानसरोवर से चांदपोल
फेज 1B - चांदपोल से बड़ी चौपड़ भूमिगत रेल मार्ग बनाया जा रहा है।

2. द्वितीय चरण - अम्बाबाड़ी से सीतापुरा (23.09Km) प्रस्तावित है।

- यह देश का प्रथम और एशिया का द्वितीय ट्रेक है। जहाँ जमीन से ऊपर रोड व उसके ऊपर मेट्रो रेल का ट्रेक है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

वायु परिवहन :-

वायुमार्ग परिवहन हेतु सांगानेर एयरपोर्ट देश का 14 वाँ अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है। यहाँ से विभिन्न देशों व राज्यों के लिए परिवहन सुविधा उपलब्ध है।

कृषि :-

जिले में अधिकांश जनसंख्या कृषि एवं पशुपालन से अपना जीविकोपार्जन करती है। कृषि न केवल ग्रामीण जनसंख्या के व्यवसाय एवं आय का आधार है बल्कि औद्योगिक कच्चे माल का भी है। (2014) यहा कुल 972248 हैक्टेयर क्षेत्र में कृषि कार्य किया जाता है। इनमें खाद्यान्न - 551852 हैक्टेयर क्षेत्रफल व दलहन 245510 हैक्टेयर, तिलहन - 173040 हैक्टेयर क्षेत्र मे की जाती है। इनमें - गेहूँ, जो, चना, सरसों, मुगफली, गन्ना, बाजरा, सरसो, ज्वार, मोठ, मुंग, जौ, मटर मैथी आदि फसले की जाती है। कृषि प्राकृतिक तत्वों तापक्रम, वर्षा वितरण, उच्चावच तथा मिट्टी की दशाओं से प्रभावित होती है।

पशुपालन :-

जिले में पशुपालन एक प्रमुख आर्थिक गतिविधि है। यहा कृषि के साथ-साथ पशुपालन भी किया जाता है। पशु जनगणना (2012) में कुल पशुधन 3167343 है। पशुधन में गोवंश, भैंस, बकरी, घोड़े, ऊँट, भेड़, सुअर, कुत्ता, खरगोश, खच्चर, कुक्कुट आदि पाये जाते है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

शिक्षा व चिकित्सा :- जिले में शिक्षा के विकास हेतु (2014) के अनुसार 264 सामान्य शिक्षा हेतु कॉलेज, 3 व्यावसायिक एवं विशेष शिक्षा हेतु 3228 उच्च माध्यमिक विद्यालय, 13 आई.टी.आई, 6408, योग केन्द्र, 40 ऐलोपैथिक चिकित्सालय, 125 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, 10 मातृत्व एवं शिशुकल्याण केन्द्र, 29 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, 653 उपस्वास्थ्य केन्द्र, 734 परिवार कल्याण केन्द्र, 294 राजकीय आयुर्वेदिक औषधालय 10 राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय स्थित है।

वन्य जीव एवं संरक्षण :- इसके लिए जयपुर जन्तुआलय (1876) व मृगों की सुरक्षा के लिए संजय उद्यान (1986) तथा अशोक विहार मृगवन (1886) स्थापित किये। तथा नाहरगढ़ अभयारण्य (1982) में जमवारामगढ़ अभयारण्य (1982) इनके अलावा जिले के विभिन्न क्षेत्रों में आखेट निषिद्ध क्षेत्र राज्य सरकार द्वारा वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम 1972 की धारा 37 के अन्तर्गत घोषित किये गये है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

पर्यटन :-
जयपुर भारत के प्रमुख पर्यटक परिपथ के स्वर्णिम त्रिकोण पर अवस्थित है। पर्यटन को मोहम्मद यूनुस समिति के सिफारिशों पर 1989 में उद्योग दर्जा प्रदान किया गया।
जयपुर की सुन्दरता की तुलना पेरिस से, आकर्षण की तुलना बुडापेस्ट तथा भव्यता की तुलना मास्को से की जाती है।
पुराने शहर के चतुर्दिश परकोटा बना है जिसमें विभिन्न प्रवेशद्वार - दक्षिण में अजमेरी गेट, सांगानेरी गेट, घाट गेट एवं न्यूगेट, पश्चिम में चाँदपोल गेट, उत्तर में ध्रुव गेट तथा पूर्व मे सूरजपोल गेट है। नगर का प्रमुख आकर्षण स्वयं नगरीय क्षेत्र है। इसमें राजमहल (सिटी पैलेस), चन्द्रमहल, ईसरलाट जन्तर-मन्तर जयगढ़ (गिरिदुर्ग), हवामहल, रामनिवास बाग, गैटोर की छतरियाँ, गलता, नाहरगढ़, विद्याधर का बाग, सिसोदिया महल व उद्यान, सांगानेर आमेर, माओटा झील, जयगढ़, जलमहल अलखनाथ मठ, सामोद पैलेस, चूलगिरि, आदि स्थित है।
पर्यटन विभाग द्वारा हाथी महोत्सव, गणगौर मैला, तीज की सवारी, पंतग उत्सव, समर फेस्टिवल आदि का आयोजन किया जाता है।
पर्यटकों के विश्राम व्यवस्था हेतु - होटल गणगौर, होटल तीज, होटल स्वागतम, होटल झील, रामगढ़, मोटल शाहपुरा, दुर्ग कैफेटेरिया नाहरगढ़ आदि की व्यवस्था की गई है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

जनसंख्या व आयाम :-

जनसंख्या की दृष्टि से जयपुर जिला राजस्थान का सबसे बड़ा जिला है। वर्ष 1901 में जिले की जनसंख्या 944116 थी इसमें पुरूषों की जनसंख्या 496,066 व महिलाओं की संख्या 448.050 थी। वर्ष 1911 की जनगणना के अनुसार यह जनसंख्या 889399 रह गई इसके बाद वर्ष 1921 में 729878 तथा 1931 में 813632 रही। 1921, 1931 में जनसंख्या घटती रही इसका मुख्य कारण अकाल, महामारियों संसाधनों का अभाव था। कालान्तर में 1951 के बाद जनसंख्या में लगातार वृद्धि रही जो जनगणना 2011 के अनुसार कुल जनसंख्या 6626178 हो गई इसमें पुरूषों की जनसंख्या 3468507 व स्त्रीयों की संख्या 3157671 है।

पुरूषों की तुलना में स्त्रीयों की जनसंख्या वर्तमान में भी कम है। इसका मुख्य कारण पुत्र प्राप्ति की लालसा, तथा अन्य कारणों से स्त्रीयों की संख्या कम है।

जिले का लिंगानुपात (2011) मे 910 है जो पुरूषों की अपेक्षा कम है इसका मुख्य कारण बालकों को प्राथमिकता देना - अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक कारणों से लड़कों को वरीयता दी जाती है तथा कन्या-भ्रूण हत्या, बाल-विवाह, स्त्रियों की आर्थिक दृष्टि पुरूषों पर निर्भर, चिकित्सा अभाव बालिका शिक्षा अभाव आदि कारण है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

जयपुर जिला साक्षरता :-

सभ्य समाज व विकास के लिए साक्षरता महत्वपूर्ण है। किसी भी भाषा मे साधारण समझ के साथ लिखने और पढने वाले व्यक्ति की योग्यता वाले व्यक्ति को साक्षर कहते है। जिले की 1951 मे साक्षरता 11.15% प्रतिशत थी इसमें पुरुष साक्षरता 17.73 प्रतिशत व महिला साक्षरता 4 प्रतिशत थी। 1951 के बाद शिक्षा मे बहुत सुधार हुआ और 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की कुल साक्षरता 75.51 प्रतिशत हो गई। इसमें पुरुष साक्षरता 86.05 व स्त्रीयों की साक्षरता 64.02 प्रतिशत है। साक्षरता को प्रभावित करने वाले कारक निम्न जीवन स्तर, शिक्षा पर व्यय, संसाधनो की कमी, धार्मिक व राजनैतिक पृष्ठभूमि, आदि है।

जनसंख्या घनत्व :-

प्रति वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों की संख्या जनसंख्या घनत्व को दर्शाती है। जनगणना 1961 के अनुसार जिले का कुल जनसंख्या घनत्व 136 व्यक्ति प्रति वर्ग km था। इसमें ग्रामीण जनसंख्या घनत्व 103 व्यक्ति प्रति वर्ग km व नगरीय जनसंख्या घनत्व 1496 व्यक्ति प्रति वर्ग km था। 2011 की जनगणना के अनुसार जिले का जनसंख्या घनत्व 595 व्यक्ति प्रति वर्ग km है। इसमें ग्रामीण जनसंख्या घनत्व 315 व्यक्ति प्रति वर्ग km व नगरीय जनसंख्या घनत्व 4266 व्यक्ति प्रति वर्ग km हो गया है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

जनसंख्या घनत्व को - उच्चावच, वर्षा, नगरीयकरण, धरातल आदि प्रभावित करते हैं।

धार्मिक जनसंख्या :- जिले में सभी धर्मों के लोग निवास करते हैं। जगणना 2011 के अनुसार हिन्दू - 5819980, मुस्लिम - 687452, सिन्ख - 18782, जैन - 81079, ईसाई - 12708, बौद्ध - 1020, अन्य धर्म - 257, धर्म नहीं बताया - 4900 हैं। यहां सभी धर्मों को एक ही सद्भावना से देखा जाता है।

प्रमुख मेले एवं त्यौहार :- जिले में धार्मिक व सांस्कृतिक उत्सव प्रमुख हैं। इनमें मेले एवं त्यौहार प्रमुख हैं। इनमें गणगौर, शीतला माता, रामनवमी, अक्षय तृतीया, तीज, मोहर्रम, रक्षाबन्धन, कृष्ण जन्माष्टमी, नवरात्रा महोत्सव, दशहरा, दीपावली, ईदुलजुहा, होली, यह सभी त्यौहार व मेले प्रारंभ काल से यहाँ की सांस्कृतिक और धार्मिक भावनाओं से जुड़े हुये हैं। ये त्यौहार व मेले देश की सांस्कृतिक व धार्मिकता को एक सुत्र में संजोये रखा है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

जयपुर जिले का प्रशासनिक स्वरूप :-

जिले को प्रशासनिक रूप से सुचारू बनाये रखने के लिए जिले को 16 तहसीलों में विभाजित किया गया है। इसके साथ ही जिले में 16 उपखण्ड, 13 विकास खण्ड, जिले में कुल ग्रामों की संख्या 2393 है। इनमें 2339 आबाद ग्राम व 54 गैर आबाद ग्राम तथा 11 कस्बे एवं 11 नगरपालिकाएँ एवं 1 नगर निगम है।

उपखण्ड व तहसील :-

1	जयपुर (प्रथम)	जयपुर
2	जयपुर (द्वितीय)	सांगानेर
3	बस्सी	बस्सी
4	चाकसू	चाकसू
5	चाकसू	कोटखावदा
6	आमेर	आमेर
7	जमवारामगढ़	जमवारामगढ़
8	चौमूं	चौमूं
9	कोटपूतली	कोटपूतली
10	शाहपुरा	शाहपुरा
11	विराटनगर	विराटनगर
12	कुलेरा	कुलेरा (सांभर)
13	कुलेरा	किशनगढ़ रेनवाल
14	दूदू	दूदू
15	दूदू	मौजमाबाद
16	फागी	फागी

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

मानचित्र

झालवाड

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

कालवाड़ - भौगोलिक परिवेश

परिचय :-

कालवाड़ उपतहसील जयपुर तहसील के अन्तर्गत सम्मलित है। कालवाड़ जयपुर - जोबनेर राज्य मार्ग पर स्थित है। यह जयपुर से 25 कि.मी. पश्चिम दिशा मे स्थित है।
[redacted] ग्राम की उत्तर-दक्षिण लम्बाई 3 K.m. तथा पूर्व-पश्चिम लम्बाई 2.3 कि.मी है।
ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के अनुसार - महाराजा पृथ्वीराज (आमेर) के पुत्र गोपाल ने इस ग्राम को बसाया। सन् 1658 में गोपाल को सेना का नायक बनाया गया साथ ही इन्हे दरबार [redacted] दाहिनी बाजू पर प्रथम बैठक पर बैठने का सम्मान प्राप्त हुआ।

- कालवाड़ मुख्य रूप से पहाड़ी की तलहटी मे स्थित है। ग्राम के ठीक दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर प्राचीन अरावली पर्वत श्रेणी स्थित है। जो अरावली के मध्य भाग अन्तर्गत आती है। कालवाड़ ग्राम के निकटवर्ती ग्रामों मे द. पूर्व मे भम्भौरी (3.2 Km) मुडियारामसर 6.5 Km, उ. पूर्व मे निवारू (7.1 Km) दक्षिण [redacted] धानक्या 7.5 Km. दुर्जनियावास 4. Km. उ.प. सरना डूगर (8.2 Km) उ. पश्चिम मे मुंडोता (4 Km) पश्चिम मे पचार (3 Km) [redacted] व पूर्व मे हाथोज (7.5 Km) आदि स्थित है।
ग्राम से कनकपुरा [redacted] रेल्वे स्टेशन 5.5 Km. व धानक्या रेल्वे स्टेशन (7 Km) दूरी पर स्थित है। कालवाड़ का कुल क्षेत्रफल 19.59 वर्ग Km है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

भौतिक स्वरूप :-

ग्राम पहाड़ी कीं तलहटी पर स्थित है। यहा का अधिकांश भाग पथरीला व असमतल है। तथा चारो ओर बालुका प्रधान मैदान स्थित है। पहाड़ी 1.5 Km क्षेत्र में फैली हुई है। वर्तमान मे पहाड़ी से उत्खनन हो रहा है।

मृदा :-

ग्राम की मृदा बालू युक्त कछारी दोमट मृदा पाई जाती है। इस मृदा मे चूना, फास्फोरिक अम्ल व ह्यूमस की कमी पाई जाती है। इसका रंग मध्यम पीले रंग का है। इस मृदा में नमी बहुत कम समय विद्यमान रहती है। उक्त मृदा रबी व खरीफ व जायद की फसलों के उपयुक्त है तथा कुछ मात्रा में गोबर की खाद, यूरिया (नाइट्रोजन यौगिक) जिप्सम, चूना, D.A.P. आदि यौगिक मृदा मे डालकर उपजाऊ क्षमता संजोएँ हुये है।

जल संसाधन :-

ग्राम का ढाल पहाड़ी अनुरूप पूर्व व दक्षिण में है। वर्षा ऋतु में इस क्षेत्र के आस-पास का जल एकत्र होकर विभिन्न नालो से बान्डी (कन्या) नदी मे मिल जाता है। यह नदी सामोद की पहाड़ी से निकलकर कालख बाध तक जाती है। वर्तमान मे वर्षा की कमी के कारण सूखी है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

स्थानिये जल संसाधनों के कुएँ व नलकुप है। इसके अलावा बिसलपुर पाइप लाइन से पेयजल आपूर्ति हेतु कार्य चल रहा है।

चित्र

प्राकृतिक वनस्पति :- यहा वर्षा की मात्रा औसत रहती है। भूमिगत जल उपलब्ध होने से वृक्षों की अनेक प्रजातियाँ पाई जाती है। इनमें खेजड़ी, रोहिडा बेर, जाल, बबूल, केर, बरगद, नीम, शीशम, आवला झाड़ियाँ, मूंजा, करोधा आदि के वृक्ष मुख्य रूप से यहाँ पाये जाते है। इन वृक्षों की लकड़ी ईधन व काष्ठ-कोयला बनाने व फर्नीचर बनाने के उपयोग में ली जाती है।

चित्र

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

जलवायु :-

यह ग्राम जयपुर से 25 km. उत्तर-पश्चिम दिशा में स्थित है। अत: जयपुर के समान ही जलवायु दशाएँ पाई जाती है। यहाँ पर अर्द्ध उष्ण जलवायु देखने को मिलती है। वर्षा की कमी के कारण वातावरण मे नमी कम व शुष्कता अधिक रहती है।

ग्रीष्म ऋतु लंबी व कठोर होती है। ग्रीष्म ऋतु में तापमान वृद्धि होने से वायुदाब कम होने लगता है। क्षेत्र में हवायें पश्चिम से पूर्व की ओर चलती है. ये हवायें थार के मरूस्थल को पार करके आती है जो गर्म व शुष्क होती है। जिससे लू चलने लगती है। यहा ग्रीष्म ऋतु में तापमान 40-47 डि.से. तक रहता है।

वर्षा ऋतु मध्य जून से सितम्बर तक रहती है। वर्षा से हवा में 50 प्रतिशत आर्द्रता रहती है। ग्राम में वर्षा औसत (40-50 cm) होती है।

शीत ऋतु :- दिसम्बर से फरवरी तक मानी गई है। इसमें तापमान 15-20° सेल्सियस तक रहता है। शीत ऋतु में पश्चिम विक्षोभ चलने से कुछ वर्षा होती है। जिसे मावठ कहा जाता है। जो रबी के फसलों के लिए अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होती है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

कृषि व पशुपालन :-

ग्राम में अधिकांश लोग कृषि व पशुपालन व्यवसाय से जुड़े हैं। क्षेत्र में रबी, खरीफ व जायद तिनों फसलों की कृषि की जाती है। इनमें गेहूँ, जो, चना, सरसों, मुंगफली, गन्ना, बाजरा, सरसों, मोठ, मुंग, मटर, प्याज, मैथी, टमाटर, तरबूज, आदि अनेक फसलों की कृषि की जाती है। फसल से अनाज पृथक करने के बाद जो चारा निकला जाता वह पशुओं के लिए उपयोग मे लिया जाता है। इनमें गाय, भैंस, भेड़ बकरी, ऊँट, आदि रखे जाते हैं। पशुपालन व कृषि किसानों की आय का मुख्य स्त्रोत है। कृषि से अनाज व पशुओं से दुग्ध व गोबर की खाद प्राप्त होती है। यह गोबर की खाद मृदा (खेत) में डालने पर मृदा की उपजाऊ क्षमता बनी रहती है।

चित्र

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

शिक्षा व चिकित्सा :-

ग्राम में शिक्षा हेतु सरकारी विद्यालय व निजी स्तर पर विद्यालय संचालित हैं तथा उच्च शिक्षा हेतु 3 निजी महाविद्यालय तथा 2 निजी आई.टी.आई संस्थाएँ संचालित हैं। शिक्षा में सुधार हेतु प्रयासरत हैं। चिकित्सा सुविधा हेतु सरकारी व निजी चिकित्सालय [redacted] हैं। लेकिन चिकित्सा सुविधाओं के अभाव में वर्तमान में भी गंभीर बिमारियों के [redacted] शहर के चिकित्सालयों में जाना पड़ता है। अतः चिकित्सा सुविधाओं में सुधार की आवश्यकता है।

चित्र

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

जनसंख्या व आयाम :-

मालवाड [redacted] ग्राम में जनसंख्या वितरण फैले हुये रूप में पाया जाता है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार यहा की कुल जनसंख्या 8393 है। इसमें 4308 पुरुष व 4085 महिलायें है। जो पुरुषों की तुलना में कम है। यहा की साक्षरता दर 74.29 प्रतिशत है। इनमें पुरुष साक्षरता 86.31% व महिला साक्षरता 61.91 प्रतिशत है। यह साक्षरता दर पुरुषों की तुलना में कम है। अतः महिला शिक्षा को और बढ़वा दिया जाना चाहिए।

प्रमुख मेले एवं त्यौहार व पर्यटन :-

ग्राम में गणगौर, दशहरा, मेलों का आयोजन किया जाता है। तथा धर्मानुसार सभी त्यौहार मनाये जाते है। इनमें दीपावली, होली, ईदुलजुहा, आदि है। मेले व त्यौहार क्षेत्र की सांस्कृतिक एकता को संजोये है। पर्यटन हेतु पुरातन हवेलियाँ व फार्महाऊस, अनेक मन्दिर दर्शनिय स्थल है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

रहन-सहन वेशभूषा :-

राजस्थान के अन्य ग्रामों की तरह यहाँ के ग्रामवासियों का रहन-सहन व वेशभूषा अत्यंत सरल हैं। वृद्ध पुरुष साफा, कुर्ता, धोती, तथा अधिकांश महिलाएं घाघरा, ओढनी आदि का प्रयोग करती है। युवा वर्ग आधुनिक वेशभूषा पेन्ट-शर्ट आदि का प्रयोग करते है.

अधिवास :-

ग्राम में अधिवास बनावट समय के अनुसार बदलती दिखाई दे रही है। अधिकांश उच्च, मध्यम आय वर्ग की जनसंख्या पक्के भवनों मे निवास करती है। तथा निम्न आय वर्ग वाली जनसंख्या कच्चे घरो-छप्पर में निवास करती है। सामान्यतय: मकान के आगे आंगन रखा जाता है तथा भवन-ईट, पत्थर, चूना, सीमेंट, बजरी, लकड़ी, मार्बल आदि से बनाये जाते है। सामान्यतय भवनों की छत का ढाल पूर्व या उत्तर दिशा में रखा जाता है। कच्चे घर को बनाने के लिए घास (कूंचा) से बनाई जाती है।

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

बाजार व परिवहन :-

कालवाड़ राज्य राजमार्ग SH.28 पर स्थित है इस मार्ग के दोनों ओर दुकाने व व्यापारिक प्रतिष्ठान स्थित है तथा एक अन्य मार्ग बाजार के अन्दर होता हुआ मुण्डोता ग्राम की ओर जाता है। यह मुख्य बाजार का रास्ता है। बसावट अति प्राचीन होने से सकरी व लंबी गलियों के रूप में बसा हुआ है। बाजार में बैंक, प्राथमिक आवश्यकताएं अन्य सुविधायें स्थित है। तथा परिवहन साधनों में Govt. बस व निजी स्तर बस व टेम्पों की सुविधा उपलब्ध है।

चित्र

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट :-

वर्तमान में कालवाड़ के समीपवर्ती गजाधपुरा ग्राम में सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट लगाया गया है। इसमें जयपुर शहर के उत्तर पूर्वी क्षेत्र का सीवरेज पानी छोड़ा जाता है इस प्लांट में पानी फिल्टर किया जा रहा है।

मृदा अपरदन एवं उत्खनन :-

क्षेत्र में मृदा अपरदन वायु, जल, पशुओं द्वारा होता है। मृदा अपरदन के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति कम हो जाती है। तथा पहाड़ी क्षेत्र में क्रेशर मशीनों से पत्थर पिसाई से डस्ट बनाई जाती है। डस्ट का उपयोग भवन, सड़क आदि विभिन्न कार्यों में किया जाता है।

चित्र

Scanned by CamScanner
Scanned by CamScanner

ग्राम मालीवाड़ा

Date 3

Page

परिचय :-

ग्राम मालीवाड़ा कालवाड़ उपतहसील से 2 K.m. द. पूर्व में स्थित है।

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

(M.A/M.Sc Pre Geography)

क्षेत्र सर्वे ⇒ प्रश्नावली प्रारूप

मुखिया का नाम : _____

पिता का नाम : :

_____

उम्र : _____

शिक्षा : _____

व्यवसाय : _____

वार्षिक आय : _____

परिवार के सदस्यों की संख्या ——— पुरूष ——— स्त्री ——— कुल

आवास का प्रकार : _____

आवास में सुविधाए : पेयजल / विद्युत / दूरभाष / शोचालय / रसोई

कृषि भूमि : _____

सिंचाई के साधन : _____

परियहन सुविधा : _____

डाकघर : _____

सड़क : _____

चिकित्सा सुविधा : _____

अन्य सुविधाएं : _____

धरातल : _____

नदिया / झीलें / तालाब _____

खनिज की जानकारी: _____

गांव का इतिहास : _____

समस्याएं एवं भावी विकास के सुझाव

Scanned by CamScanner